प्रश्नकोश

1. इतिहासकार बरनी ने दिल्ली के सुल्तानों के अधीन भारत में शासन को वास्तव में इस्लामी नहीं माना क्योंकि–

(a) अधिकतर आबादी इस्लाम का अनुसरण नहीं करती थी।

(b) मुस्लिम धर्मतत्त्वज्ञ की अक्सर उपेक्षा की जाती थी।

(c) सुल्तान ने मुस्लिम कानून के साथ-साथ अपने स्वयं के भी नियम बना दिए थे।

(d) गैर-मुसलमानों को धार्मिक स्वतंत्रता दे दी गई थी।

I.A.S. (Pre) 2002

उत्तर–(a)

इतिहासकार बरनी ने दिल्ली के सुल्तानों के अधीन भारत में शासन को वास्तव में इस्लामी नहीं माना है, क्योंकि सल्तनत काल में अधिकतर आबादी इस्लाम का अनुसरण नहीं करती थी।

2. सल्तनत काल के अधिकांश अमीर एवं सुल्तान किस वर्ग के थे?

(a) तुर्क (b) मंगोल

(c) तातार (d) अरब

U.P. P.C.S. (Pre) 1991

उत्तर–(a)

सल्तनत काल के अधिकांश अमीर एवं सुल्तान तुर्क वर्ग के थे। सुल्तान केंद्रीय शासन का प्रधान था। इसी तरह सल्तनत काल में प्राय: सभी प्रभावशाली पदों पर नियुक्त व्यक्तियों को अमीर की संज्ञा दी जाती थी। इन अमीरों का प्रभाव उस समय अधिक होता था, जब सुल्तान अयोग्य और निर्बल अथवा अल्पवयस्क होता था।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. दिल्ली सल्तनत के राजस्व प्रशासन में राजस्व वसूली के प्रभारी को 'आमिल ' कहा जाता था।

2. दिल्ली के सुल्तानों की इक्ता प्रणाली एक प्राचीन देशी संस्था थी।

3. 'मीर बख्शी' का पद दिल्ली के खलजी सुल्तानों के शासनकाल में अस्तित्व में आया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2

(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

I.A.S. (Pre) 2019

उत्तर–(a)

दिल्ली सल्तनत के राजस्व प्रशासन में प्रत्येक परगना (ग्रामों का समूह) पर एक आमिल या अमलगुजार की नियुक्ति की जाती थी, जो परगने के राजस्व संग्रह का कार्य करता था। इक्ता प्रणाली भारत की प्राचीन देशी संस्था न होकर अरब की मौलिक प्रणाली थी, जिसका उद्भव पश्चिमी एशिया (ईरान) में हुआ था। इसे दिल्ली सल्तनत में इल्तुतमिश द्वारा लागू किया गया था। मीर बख्शी (सैन्य विभाग का प्रमुख और मनसबदारों का प्रमुख) मुगल काल का पद है, न कि सल्तनत काल का। सल्तनत काल में सैन्य विभाग का प्रमुख दीवान-ए-अर्ज कहलाता था।

4. निम्नलिखित में से कौन-सी एक विशिष्टता 'इक्ता व्यवस्था' की नहीं है?

(a) इक्ता एक राजस्व एकत्रित करने की व्यवस्था थी।

(b) सियासतनामा इक्ता व्यवस्था की जानकारी का स्रोत था।

(c) इक्ता से एकत्रित राजस्व सीधा सुल्तान के खाते में जाती थी।

(d) मुक्ती को इक्ता से एकत्रित राजस्व से सैनिक रखने पड़ते थे।

U.P.P.C.S. (Pre) 2019

उत्तर–(c)

भारत में सल्तनत काल के दौरान इल्तुतमिश द्वारा 'इक्ता प्रणाली' का प्रचलन किया गया था। इक्ता व्यवस्था के तहत इक्ता के धारक (इक्तादार या मुक्ती) को उस भू-क्षेत्र से राजस्व और करों को एकत्रित करने की जिम्मेदारी दी जाती थी। इक्ता से एकत्रित राजस्व सीधा सुल्तान के खाते में नहीं जाता था, बल्कि इसी राजस्व से मुक्ती अपने सैन्य और प्रशासनिक व्यय पूरे करता था तथा उसे इस राजस्व से सुल्तान की सेवा हेतु सैनिक रखने पड़ते थे। खालिसा (खालसा) भूमि से प्राप्त आय सीधे सुल्तान के खाते में जाती थी। अबू अली हसन इब्न अली तुसी 'निजाम अल-मुल्क' की फारसी पुस्तक 'सियासतनामा' में प्रारंभिक इक्ता व्यवस्था का विवरण मिलता है।

5. मध्यकालीन भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा आकार की दृष्टि से आरोही क्रम में सही अनुक्रम है?

(a) परगना–सरकार–सूबा (b) सरकार–परगना–सूबा

(c) सूबा–सरकार–परगना (d) परगना–सूबा–सरकार

I.A.S. (Pre) 2021

उत्तर–(a)

मध्यकालीन भारत के संदर्भ में संपूर्ण साम्राज्य को सूबा (प्रांत) में बांटा गया था। 'सूबेदार' सूबे के शासन का प्रमुख अधिकारी था। प्रशासन की दृष्टि से प्रत्येक सूबे को अनेक इकाइयों में बांटा गया था। इन इकाइयों को 'सरकार' कहा जाता था। प्रत्येक सरकार का प्रमुख अधिकारी 'फौजदार' होता था। प्रत्येक सरकार को पुन: 'परगना' या 'महल' में विभाजित किया गया था। यहां का प्रमुख अधिकारी 'शिकदार' होता था। परगनों के अंतर्गत गांव होते थे, जिन्हें 'मावदा' या 'दीह' कहा जाता था। मावदा के अंतर्गत बहुत छोटी-छोटी बस्तियां होती थीं,

Scanned with OKEN Scanner

जिन्हें 'नागला' कहा जाता था। शाहजहां के शासनकाल में परगना तथा सरकार के बीच एक और इकाई का निर्माण किया गया, जिसे 'चकला' कहते थे तथा जिसके अंतर्गत कुछ परगने आते थे। अत: मध्यकालीन भारत में आकार की दृष्टि से सही आरोही अनुक्रम इस प्रकार है—परगना-सरकार -सूबा। इस प्रकार विकल्प (a) सही उत्तर है।

6. दिल्ली सल्तनत में दीवान-ए-अर्ज विभाग की स्थापना किसने की?

(a) बलबन (b) इल्तुतमिश
(c) अलाउद्दीन खिलजी (d) फिरोज तुगलक

R.A.S./R.T.S. (Pre) 2018

उत्तर—(a)

दिल्ली सल्तनत में गुलाम वंश के शासक बलबन ने सैन्य व्यवस्था सुदृढ़ करने के उद्देश्य से दीवान-ए-अर्ज विभाग की स्थापना की। सर्वप्रथम बलबन ने ही तत्पर सेना रखने की शुरुआत की। बलबन ने इमादुलमुल्क को दीवान-ए-आरिज (सैन्य मंत्री) नियुक्त किया तथा उसे रावत-ए-अर्ज की उपाधि दी। दीवान-ए-अर्ज विभाग का मुख्य कार्य सैन्य भर्ती, सेना को अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित करना व वेतन वितरण आदि था।

7. निम्नलिखित में से कौन एक युग्म सुमेलित नहीं है?

(a) दीवान-ए-मुस्तखराज – अलाउद्दीन खिलजी
(b) दीवान-ए-अमीरकोही – मुहम्मद तुगलक
(c) दीवान-ए-खैरात – फिरोज तुगलक
(d) दीवान-ए-रियासत – बलबन

U. P. P. C. S. (Mains) 2008

उत्तर—(d)

दिए गए विकल्पों में प्रशासनिक विभागों को प्रारंभ करने वाले शासक हैं-

दीवान-ए-मुस्तखराज	–	अलाउद्दीन खिलजी (राजस्व विभाग)
दीवान-ए-अमीर-ए-कोही	–	मुहम्मद बिन तुगलक (कृषि विभाग)
दीवान-ए-खैरात	–	फिरोज तुगलक (दान विभाग)
दीवान-ए-रियासत	–	अलाउद्दीन खिलजी (बाजार नियंत्रण विभाग)

8. निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा सही रूप में सुमेलित है?

(a) दीवान-ए-बंदगान - फिरोज तुगलक
(b) दीवान-ए-मुस्तखराज - बलबन
(c) दीवान-ए-कोही - अलाउद्दीन खिलजी
(d) दीवान-ए-अर्ज - मुहम्मद तुगलक

I.A.S. (Pre) 2001

उत्तर—(a)

'दीवान-ए-बंदगान' विभाग का गठन फिरोजशाह तुगलक ने किया। यह विभाग दासों की देखरेख करता था। फिरोज के शासनकाल में दासों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। अफीफ के लेखानुसार राजधानी तथा प्रांतों में दासों की संख्या बढ़कर एक लाख 80 हजार हो गई। अलाउद्दीन खिलजी ने राजस्व व्यवस्था से भ्रष्टाचार और लूट को समाप्त करने के लिए एक नए विभाग 'दीवान-ए-मुस्तखराज' की व्यवस्था की। मुहम्मद बिन तुगलक ने संकट की स्थिति में कृषकों को सहायता प्रदान करने के लिए केंद्र में कृषि विभाग (दीवान-ए-अमीर-ए-कोही) की स्थापना की। दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग) की स्थापना बलबन ने की थी।

9. सल्तनत काल में 'दीवान-ए-अमीर-ए-कोही' विभाग निम्नलिखित में से किससे संबंधित था?

(a) सेना (b) राजस्व
(c) कृषि (d) मनोरंजन

U.P.P.C.S. (Mains) 2017

उत्तर—(c)

मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि की उन्नति के लिए एक नया विभाग 'दीवान-ए-अमीर-ए-कोही' की स्थापना की। इस विभाग का मुख्य कार्य कृषकों को प्रत्यक्ष सहायता देकर अधिक भूमि कृषि कार्य के अधीन लाना था।

10. निम्नलिखित में से किस शासक ने 'दीवान-ए-अमीर-कोही' विभाग की स्थापना की थी?

(a) बलबन (b) अलाउद्दीन खिलजी
(c) मुहम्मद बिन तुगलक (d) फिरोज शाह तुगलक

U.P.R.O./A.R.O. (Pre) 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करो एवं निम्न दिए हुए कूट में से सही उत्तर का चयन करो—

सूची-I	सूची-II
A. दीवाने अर्ज	1. धार्मिक मुद्दों से संबंधित
B. दीवाने रिसालत	2. सरकारी पत्र व्यवहार से संबंधित
C. दीवाने इन्शा	3. वित्तीय मामलात से संबंधित
D. दीवाने वजारत	4. सेना विभाग से संबंधित

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	3	4	2
(b)	2	4	1	3
(c)	3	2	1	4
(d)	4	1	2	3

R.A.S./R.T.S. (Pre) 2013

उत्तर—(d)

Scanned with OKEN Scanner

मध्यकाल के दिए गए विभागों एवं उनकी कार्यविधियों का सुमेलन निम्नानुसार है–

दीवाने अर्ज – सेना विभाग से संबंधित
दीवाने रिसालत – धार्मिक मुद्दों से संबंधित/विदेशी मामलों से संबंधित
दीवाने इन्शा – सरकारी पत्र व्यवहार से संबंधित
दीवाने वजारत – वित्तीय मामलात से संबंधित

12. 'दीवान-ए-अर्ज' विभाग संबंधित था –

(a) शाही पत्राचार से (b) विदेश विभाग से
(c) रक्षा विभाग से (d) वित्त विभाग से
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/ उपर्युक्त में से एक से अधिक

60th to 62nd B.P.S.C. (Pre) 2016

उत्तर–(c)

'दीवान-ए-आरिज' अथवा 'दीवान-ए-अर्ज' सल्तनत काल में सैन्य विभाग से संबंधित था। इस विभाग की स्थापना बलबन ने की थी।

13. निम्न में से किस राजवंश के अंतर्गत विजारत का चरमोत्कर्ष हुआ?

(a) इलबरी (b) खिलजी
(c) तुगलक (d) लोदी

U.P. P.C.S. (Pre) 1997

उत्तर–(c)

विजारत एक ऐसी संस्था थी, जिसे इस्लामी संविधान में मान्यता दी गई थी। जिन गैर-अरबी संस्थाओं को अंतर्मुक्त किया गया तथा मुस्लिम सम्राटों के अधीन मंत्रिपरिषद के लिए जो नाम व्यवहार में लाए गए थे, उन्हें विजारत की संज्ञा दी गई थी। विजारत को एक संस्था के रूप में अपनाने की प्रेरणा अब्बासी खलीफाओं ने फारस से ली थी। महमूद गजनवी के राज्यकाल में अब्बास फजल-बिन-अहमद प्रथम वजीर हुए, जो शासन व्यवस्था चलाने में निपुण थे। राज्य का प्रधानमंत्री वजीर कहलाता था। वजीर मुख्यतया राजस्व विभाग (दीवान-ए-वजारत) का प्रधान होता था। इस दृष्टि से वह लगान, कर व्यवस्था, दान तथा सैनिक व्यय आदि सभी की देखभाल करता था। तुगलक काल मुस्लिम भारतीय विजारत का स्वर्ण काल था। फिरोज तुगलक के समय वजीर का पद अपने चरमोत्कर्ष पर जा पहुंचा। गयासुद्दीन तुगलक ने अपने कार्यकाल में एक नया प्रयोग किया जिसके अंतर्गत उसने भूतपूर्व वजीरों–ख्वाजा खातिर, ख्वाजा मुहज्जब तथा निजामुलमुल्क जुनैदी को सम्मानपूर्वक आमंत्रित किया और वह न केवल महत्वपूर्ण मामलों पर उनसे सलाह लेता था, बल्कि उनके विचारों को महत्व भी देता था।

14. मध्यकाल की सरकार एक समग्र संरचना थी। ये विलय था–

(a) तुर्क-मंगोल (मध्य एशिया) का
(b) फारस-अरब, तुर्क-मंगोल (मध्य एशिया) का
(c) फारस-अरब, तुर्क-मंगोल, भारतीय तत्वों का
(d) फारस-अरब का

Jharkhand P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर–(c)

मध्यकाल की सरकार में फारस-अरब, तुर्क-मंगोल तथा भारतीय तत्वों का मिश्रण था।

15. निम्नलिखित में कौन भूमि-उत्पाद पर लगने वाले कर को इंगित करता है?

(i) खराज (ii) खुम्स
(iii) उश्र (iv) मुकाई

अपने उत्तर का चयन निम्नलिखित कूटों से करें–

(a) केवल (i) (b) (ii) एवं (iii)
(c) (i), (ii) एवं (iii) (d) (i), (iii) एवं (iv)

40th B.P.S.C. (Pre) 1995

उत्तर–(d)

'खुम्स' भूमि उत्पाद पर लगने वाला कर नहीं था, अपितु यह एक धर्म निरपेक्ष कर था। खुम्स लूट का धन था। जो युद्ध में शत्रु राज्य की जनता से लूट में प्राप्त होता था। इस लूट का 4/5 भाग सैनिकों में बांट दिया जाता था और शेष 1/5 भाग राजकोष में जमा होता था, किंतु अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद बिन तुगलक ने 4/5 भाग राजकोष में रखा और शेष 1/5 सैनिकों में बांटा। सिकंदर लोदी ने गड़े हुए खजाने से कोई हिस्सा नहीं लिया। खुम्स के अलावा अन्य सभी भूमि-उत्पाद पर लगने वाले कर को इंगित करते हैं।

16. भारत के किस मध्यकालीन शासक ने 'इक्ता व्यवस्था' प्रारंभ की थी?

(a) इल्तुतमिश
(b) बलबन
(c) अलाउद्दीन खिलजी
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U. P. P. C. S. (Pre) 2010

उत्तर–(a)

भारत में इक्ता व्यवस्था की शुरुआत इल्तुतमिश ने की थी। यह हस्तांतरणीय लगान अधिन्यास था। यह भूमि का एक विशेष खंड होता था, जो सैनिक या सैनिक अधिकारियों को प्रदान किया जाता था, किंतु वे इस भू-भाग के मालिक नहीं होते थे। वे केवल लगान का ही उपभोग कर सकते थे।

17. सल्तनत काल में भू-राजस्व का सर्वोच्च ग्रामीण अधिकारी था–

(a) चौधरी (b) रावत
(c) मलिक (d) पटवारी

I.A.S. (Pre) 2004

उत्तर–(a)

Scanned with OKEN Scanner

सल्तनत काल में शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जो स्वशासन तथा पैतृक अधिकारियों की व्यवस्था के अंतर्गत थी। ग्राम स्तर पर चौधरी भू-राजस्व का सर्वोच्च अधिकारी था। इस प्रकार राज्य के कर्मचारियों का किसानों से प्रत्यक्ष संपर्क न था, बल्कि वे वंशानुगत और परंपरा से चले आ रहे गांव अथवा जिले के अधिकारियों से संपर्क रखते थे और किसानों से लगान वसूल कर उन्हें देते थे। मुक्ति और वली के कार्यों की देखभाल के लिए सुल्तान ख्वाजा नामक एक अधिकारी की नियुक्ति करता था।

18. 'शर्ब' कर लगाया जाता था—

(a) व्यापार पर (b) सिंचाई पर

(c) गैर-मुसलमानों पर (d) उद्योग पर

U.P. P.C.S. (Pre) 1996

उत्तर—(b)

फिरोज तुगलक ने कुरान के नियमों को दृष्टि में रखकर कर निर्धारण किया। उसने कुरान में अनुमोदित चार कर लगाने की अनुमति दी—खराज, जजिया, खुम्स एवं जकात। धार्मिक नियमों के विद्वानों से परामर्श कर उसने खेतों की उपज के दस प्रतिशत की दर से सिंचाई कर (हक्क-ए-शर्ब) भी लगाया।

19. जवाबित का संबंध किससे था?

(a) राज्य कानून से

(b) मनसब प्रणाली को नियंत्रण करने वाले कानून से

(c) टकसाल से संबंधित कानून

(d) कृषि संबंधित कर

39th B.P.S.C. (Pre) 1994

U.P. P.C.S. (Pre) 1997

उत्तर—(a)

सल्तनत कालीन प्रशासनिक शब्दावली में जवाबित का संबंध राज्य के कानून से है।

20. हदीस है एक—

(a) इस्लामिक कानून (b) बंदोबस्त कानून

(c) सल्तनत कालीन कर (d) मनसबदार

(e) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2014

उत्तर—(a)

हदीस एक इस्लामिक कानून है। इस्लाम धर्म के मूल स्रोत 'कुरान' के बाद दूसरा स्रोत 'हदीस' है। दोनों को मिलाकर इस्लाम धर्म की संपूर्ण व्याख्या और इस्लामी शरीअत की संरचना होती है।

21. सल्तनत काल में 'फवाज़िल' का अर्थ था—

(a) अभिजात वर्ग (Nobles) को दिया जाने वाला अतिरिक्त भुगतान

(b) वेतन के बदले में निर्धारित मालगुजारी

(c) इक्तादारों द्वारा सरकारी खजाने में जमा की जाने वाली अतिरिक्त राशि

(d) कृषकों से की जाने वाली गैर-कानूनी जबरी वसूली

I.A.S. (Pre) 1998

उत्तर—(c)

सल्तनत काल में 'फवाज़िल' या 'फ़ाजिल' शब्द से आशय इक्तादारों द्वारा सरकारी खजाने में जमा की जाने वाली अतिरिक्त राशि से है।

22. सल्तनत काल की दो प्रमुख मुद्राओं का पता निम्नलिखित कूट से करें—

1. दाम **2. जीतल**

3. रुपिया **4. टंका**

कूट :

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3

(c) 2 और 3 (d) 2 और 4

U.P. P.C.S. (Pre) 2001

उत्तर—(d)

सल्तनत कालीन दो प्रमुख मुद्राएं हैं—जीतल एवं टंका। इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का पहला तुर्क शासक था, जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाए। मुद्रा प्रणाली में उसका योगदान दिल्ली सल्तनत के शासकों में सर्वाधिक है, क्योंकि उसी ने दो प्रमुख सिक्के अर्थात चांदी का टंका और तांबे का जीतल प्रचलित किया। शशगनी भी चांदी का सिक्का था। टंका एवं जीतल का अनुपात 1 : 48 का था।

23. निम्न में से किसने 'टंका' (Tanka) नामक चांदी का सिक्का चलाया था?

(a) अलाउद्दीन खिलजी (b) कुतुबुद्दीन ऐबक

(c) इल्तुतमिश (d) बलबन

U.P. Lower Sub. (Pre) 2008

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. उत्तर भारत में चांदी का सिक्का 'टंका' जारी करने वाला कौन मध्यकालीन शासक था?

(a) इल्तुतमिश (b) रजिया

(c) अलाउद्दीन खिलजी (d) मोहम्मद तुगलक

U.P. P.C.S. (Pre) 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

Scanned with OKEN Scanner

25. सल्तनत काल के सिक्के—टंका, शशगनी एवं जीतल किन धातुओं के थे?

(a) चांदी, तांबा
(b) सोना, चांदी, तांबा
(c) चांदी, जस्ता, तांबा
(d) सोना, जस्ता, तांबा

39th B.P.S.C. (Pre) 1994

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. किसके सिक्कों पर बगदाद के अंतिम खलीफा का नाम सर्वप्रथम अंकित हुआ?

(a) कुतुबुद्दीन ऐबक
(b) इल्तुतमिश
(c) अलाउद्दीन खिलजी
(d) अलाउद्दीन मसूद शाह

U.P.P.C.S. (Pre) 2012

उत्तर—(d)

अलाउद्दीन मसूद शाह (1242-46 ई.) के सिक्के पर सर्वप्रथम बगदाद के अंतिम खलीफा का नाम अंकित हुआ था। बगदाद के अंतिम खलीफा अल मुस्तसीम थे। यह 1242-58 ई. तक खलीफा रहे। इल्तुतमिश के सिक्के पर खलीफा अल मुस्तनसीर का नाम उल्लिखित था, जो 1226-42 ई. तक खलीफा रहे।

Scanned with OKEN Scanner